महिलाओं की स्वायत्तता और निर्णय लेने पर शिक्षा और आर्थिक अधिकारिता का प्रभाव

Pradeep Kumar Kushwaha[1]*, Dr. Pradeep Kumar[2]

[1] Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

[2] Professor, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

***सार -** शिक्षा तक पहुंच और सवैतनिक रोजगार को महिला सशक्तिकरण के दो महत्वपूर्ण निर्धारकों के रूप में माना जाता है। शिक्षा महिलाओं को पितृसत्तात्मक परंपराओं की सामाजिक और पारिवारिक बाधाओं से स्वतंत्रता प्राप्त करने में मदद करती है। कई शोधकर्ताओं ने परिवार में महिलाओं की स्थिति के साथ शिक्षा के स्तर का सीधा संबंध साबित किया है। निर्णय लेने की प्रक्रिया में वित्तीय भागीदारी पर महिलाओं की स्वायत्तता और उनकी स्वायत्तता संसाधनों तक पहुंच के साथ-साथ महिला सशक्तिकरण के समान रूप से महत्वपूर्ण घटक हैं। वर्तमान अध्ययन ने 'वित्तीय निर्णय लेने', आंदोलन की स्वतंत्रता और सामाजिक भागीदारी पर महिलाओं की स्वायत्तता का विश्लेषण करने का प्रयास किया है, जो कि शिक्षा और खरीदी गई संपत्ति पर उनके सशक्तिकरण के संबंध में है। अध्ययन में छतरपुर उपनगर के पश्चिमी भाग की 1387 चयनित कामकाजी महिलाओं की जानकारी शामिल थी। अध्ययन में पाया गया है कि, 'वित्तीय निर्णय' और 'सामाजिक भागीदारी' पर महिलाओं की निर्णय शक्ति बढ़ जाती है जब वे शिक्षा के साथ सशक्त होती हैं और उनके नाम पर संपत्ति होती है। अध्ययन से यह भी पता चलता है कि, आर्थिक सशक्तिकरण निर्णय लेने और आंदोलन की स्वतंत्रता पर अधिक स्वायत्तता देता है। दूसरी ओर शिक्षा उन्हें मीडिया तक बेहतर पहुंच प्रदान करती है और अनुपात में पति की आय पर नियंत्रण रखती है। इसलिए, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि, आर्थिक सशक्तिकरण कामकाजी महिलाओं को शिक्षा प्राप्ति की तुलना में निर्णय लेने में अधिक स्वायत्तता देता है।*

***खोजशब्द -** स्वायत्तता, निर्णय लेने, आर्थिक अधिकारिता*

---X---

प्रस्तावना

समाज में अपनी स्थिति को बदलने के लिए महिला शिक्षा एक अनिवार्य आवश्यकता है। शिक्षित महिलाएँ सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए समाज में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। शिक्षा अपने परिवारों के भीतर और बाहर अपनी स्थिति को ठीक करने के साधन के रूप में असमानताओं और असमानताओं को समाप्त करती है। यह महिला सशक्तिकरण, समृद्धि, विकास और कल्याण का प्रमुख कारक है। शिक्षा महिलाओं को अधिक मजबूती प्रदान करती है। ऐसी ताकत सशक्तिकरण की प्रक्रिया से आती है और सशक्तिकरण शिक्षा से आएगा। भारत में महिला सशक्तीकरण असमानता और समाज में महिलाओं की भेद्यता में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह पत्र भारत में महिलाओं की शिक्षा के संबंध में उभरती हुई तस्वीर को पकड़ने का एक प्रयास है।

महिलाएं परिवार, समाज और देश की प्रगति में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। देश में लोकतंत्र को सफल बनाने के लिए महिला शिक्षा पुरुषों के साथ मिलकर जरूरी है। शिक्षित महिलाएं परिवार में खुशियों का असली स्रोत होती हैं। शिक्षा महिला सशक्तीकरण के लिए एक मील का पत्थर है क्योंकि यह उन्हें उनकी पारंपरिक भूमिका का सामना करने और उनकी जीवन-शैली को बदलने के लिए चुनौतियों का जवाब देने में सक्षम बनाता है।

साहित्य की समीक्षा

www.ignited.in

भजन चंद्र बर्मन (2018): की जनगणना रिपोर्ट 2011 के अनुसार, हमारे देश की लगभग 50% जनसंख्या महिलाएं हैं। समाज में उनका बहुत बड़ा योगदान है। इसलिए, हम उनके महत्व को नकार नहीं सकते। समाज में महान योगदान के बावजूद, समाज के हर क्षेत्र में महिलाएं कम सशक्त हैं। सशक्तिकरण की अवधारणा शक्ति की धारणा पर आधारित है; परिभाषा द्वारा सशक्तिकरण का अर्थ है "सक्षम करना", "देना, प्राप्त करना या शक्ति प्राप्त करना" या "आधिकारिक या कानूनी अधिकार या कुछ करने की स्वतंत्रता"। इसके अलावा, सशक्तिकरण को शक्ति के समीकरण के रूप में परिभाषित किया गया है और संसाधनों के अधिक कुशल उपयोग से महिला शिक्षा सशक्तिकरण की ओर अग्रसर होती है। "सशक्त महिलाओं में शिक्षा की भूमिका" या वर्तमान अध्ययन का विषय चुनने के पीछे दो कारण हैं। [18]

परवेज यूसुफ (2019): महिला सशक्तिकरण का मतलब महिलाओं को शक्ति या अधिकार देना है। इसका मतलब केवल उनकी आर्थिक स्थिति को ही नहीं बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक स्थिति को भी सशक्त बनाना है। सदियों से महिलाओं को उनके बुनियादी सुविधाओं जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, पारिवारिक मामलों आदि से भेदभाव और वंचित किया जाता था। शिक्षा इन सभी बाधाओं को दूर करने और जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए महिलाओं की स्थिति को बढ़ाने के लिए उपचारात्मक उपकरण है। शिक्षा समाज के दृष्टिकोण और विचारधारा को बदलकर महिलाओं के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाती है। महिलाओं को शिक्षा देना उनके विकास की सबसे अच्छी दवा है। यह पत्र महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका के उद्देश्य विश्लेषण पर आधारित है। [19]

डॉ. कुन्ही सिख भूयन (2020) "महिलाओं का सशक्तीकरण" एक ऐसा विषय है जिस पर दुनिया भर में बहस और विचार-विमर्श होता रहा है। दुनिया की आधी आबादी महिलाओं की है, वे आसमान में सबसे ऊपर पहुंचती हैं लेकिन जब तक हम महिला सशक्तीकरण के बारे में नहीं ले रहे हैं। महिलाओं के सशक्तीकरण का अर्थ है उन्हें आत्मनिर्भर होना, एक सकारात्मक आत्म-सम्मान के साथ आत्मविश्वास और आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना, विकासात्मक प्रक्रिया में भाग लेने के निर्णय लेने की क्षमता और सामाजिक परिवर्तन। एशियन एंड पैसिफिक सेंटर फॉर वुमेन एंड डेवलपमेंट के अनुसार सशक्तिकरण को एक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसका उद्देश्य किसी विशेष व्यक्ति या समूह के आत्मनिर्णय के लिए परिस्थितियों का निर्माण करना है। न केवल हमारे समाज में लैंगिक असमानता बहुत आम है, बल्कि विश्व समुदाय के सामने यह एक बड़ी चुनौती है। दुनिया भर में सभी लोगों, महिलाओं और पुरुषों के लिए शिक्षा एक मौलिक अधिकार है। प्रत्येक व्यक्ति को शैक्षिक अवसरों से लाभान्वित किया जाता है जो जीवन की जरूरतों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है, भारत में अभी भी सबसे कम महिला साक्षरता दर है; साक्षरता का निम्न स्तर महिलाओं के जीवन और उनके परिवार और हमारे देश के आर्थिक और सामाजिक विकास पर भी नकारात्मक प्रभाव डालता है। यहाँ हम शिक्षा के माध्यम से महिला सशक्तिकरण के बारे में चर्चा कर रहे हैं; समस्याओं, महिला शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, संवैधानिक प्रावधान और कुछ सुझावों को भी आगे बढ़ाया। आशा है कि हमारा अनुसंधान महिलाओं के शैक्षिक परिदृश्य और उनके विकास और सशक्तिकरण में शिक्षा के महत्व को समझने में मदद करेगा।

उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित विशिष्ट उद्देश्य हैं।

- छतरपुर उपनगर में कामकाजी महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को मापने और विश्लेषण करने के लिए निर्णय लेने में स्वायत्तता
- विभिन्न क्षेत्रों में कामकाजी महिलाओं के निर्णय लेने के स्तर में बदलाव का मूल्यांकन करना
- पिछले 10 वर्षों के दौरान कामकाजी महिलाओं के निर्णय लेने को प्रभावित करने वाले कारकों का आकलन करना

परिकल्पना

- छतरपुर जिले में कामकाजी महिलाओं की शैक्षिक उपलब्धि और निर्णय लेने वाली संपत्ति के प्रभाव की जांच करने के लिए शून्य परिकल्पना विकसित की गई है। इसलिए, शैक्षिक प्राप्ति और आर्थिक सशक्तिकरण का महिलाओं की निर्णय लेने की शक्ति पर

महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

अध्ययन का महत्व

महिलाएं आज घरेलू जीवन के साथ-साथ पेशेवर जीवन को संतुलित करने की दोहरी भूमिका निभा रही हैं, इस प्रक्रिया में उनकी सामाजिक स्थिति को बढ़ावा दे रही हैं। हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि, सरकार (स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर) और विभिन्न एजेंसियों द्वारा शिक्षा स्तर, स्वास्थ्य सामाजिक समावेशन और भुगतान रोजगार में भागीदारी के संबंध में महिलाओं की स्थिति में सुधार के प्रयास किए जाते हैं। हर संभव स्तर पर लैंगिक असमानता को कम करके उनके संवैधानिक अधिकार, सामाजिक सुरक्षा और पूर्ण सशक्तिकरण को सुनिश्चित करने के लिए भी कदम उठाए जाते हैं।

"महिला आरक्षण विधेयक" महिला सशक्तिकरण के इतिहास में एक मील का पत्थर है जो जमीनी स्तर पर हजारों महिलाओं को स्थानीय शासन का हिस्सा बनने का अवसर प्रदान करता है।

इस समय, यह अध्ययन करना महत्वपूर्ण है कि छतरपुर उपनगर में कामकाजी महिलाएं "वित्तीय स्वतंत्रता" और घरेलू स्तर के साथ-साथ समाज स्तर पर निर्णय लेने के मामले में कितनी सशक्त हैं।

शोधविधि

डेटा संग्रह: अध्ययन छतरपुर के पश्चिमी उपनगर में एकत्रित प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित है। आनुपातिक आवंटन पद्धति के तहत स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण का उपयोग करके 1387 महिलाओं का एक यादृच्छिक नमूना तैयार किया गया है। प्रतिवादी के धर्म को तबके के रूप में लिया जाता है। अच्छी तरह से प्रलेखित प्रश्नावली ने विभिन्न धर्मों की कामकाजी महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं और वित्तीय मामलों पर उनके निर्णय लेने की जानकारी एकत्र की।

उत्तरदाताओं की विशेषताओं में शामिल हैं-

a. सामाजिक-आर्थिक विशेषताएं: धर्म, शिक्षा और आय स्तर।

b. निर्णय लेने का क्षेत्र:

i. वित्तीय निर्णय लेना

ii. बच्चों की शिक्षा और करियर

iii. आंदोलन की स्वतंत्रता और

iv. सामाजिक भागीदारी

अध्ययन ने महिला सशक्तिकरण को दो संकेतकों पर मापा:

i. शिक्षा प्राप्ति: स्वनिर्णय से ली अतिरिक्त योग्यता

ii. आर्थिक सशक्तिकरण: पिछले 10 वर्षों (यानी 2005-2015) के दौरान स्वयं के नाम पर खरीदी गई संपत्ति

इन दो संकेतकों को मापदंडों के रूप में लेते हुए, कामकाजी महिलाओं की निर्णय लेने की शक्ति का विश्लेषण वित्तीय निर्णय लेने, आंदोलन की स्वतंत्रता, बच्चों की शिक्षा और करियर और सामाजिक भागीदारी के घोषित संकेतकों पर किया जाता है।

उपयोग की जाने वाली सांख्यिकीय तकनीकें:

➢ सारणीकरण, पाई-चार्ट

➢ स्वतंत्रता का ची-स्क्वायर परीक्षण, दो समान अनुपातों का परीक्षण Z-परीक्षण

डेटा विश्लेषण, परिणाम और चर्चा:

धर्म से कामकाजी महिलाएं जिनका वे पालन करती हैं: -

तालिका 1- धर्म के अनुसार कामकाजी महिलाएं

धर्म	कामकाजी महिलाओं की संख्या
हिंदू	944
मुसलमान	229
बौद्ध	123
ईसाई	27
जैन	48
अन्य	19
कुल	1387

चित्र संख्या **1.** धर्म के अनुसार कामकाजी महिलाएं

शिक्षा और आय के स्तर से कामकाजी महिलाएं

तालिका 2- शिक्षा स्तर और आय स्तर के अनुसार कामकाजी महिलाएं

शिक्षा का स्तर	मासिक आय (000 रुपये में)					
	10 से नीचे	11 से 20	21 से 30	31 से 40	40+	कुल
कोई भी नहीं	141	17	2	0	0	160
SSC	192	19	9	0	0	220
HSC	317	75	12	1	0	405
स्नातक	72	237	85	4	6	404
PG	8	26	66	23	75	198
कुल	730	374	174	28	81	1387

1387 कामकाजी महिलाओं के कुल समूह में,

- आधे से अधिक (72.61%) महिलाओं का शिक्षा स्तर एच.एस.सी. और ऊपर। जबकि,
- 14.28% महिलाओं का शिक्षा स्तर उच्चतम (पीजी) है, और केवल
- 11.54% महिलाएं एस.एस.सी या उससे कम शिक्षा स्तर की हैं।
- अधिकतम 730 (आधे से 52.63% अधिक) प्रति माह 10000/- रुपये से कम कमाते हैं, जिसमें सबसे अधिक संख्या में कामकाजी महिलाएं शामिल हैं

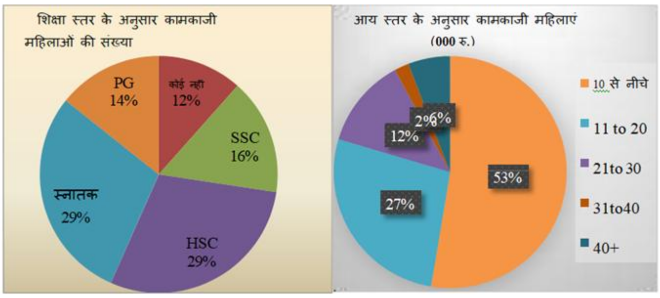

- लगभग 80% “तीन तिमाहियों से अधिक” प्रति माह रु.20000/- से कम कमाते हैं
- केवल 20.41% ही रु.20000/- प्रति माह से अधिक कमाते हैं
- (केवल 28 (2.01%) रुपये 31000/- से 40000/- रुपये की सीमा में कमाते हैं। जबकि, 81 (5.83%) प्रति माह 40000/- रुपये से अधिक आय अर्जित करते हैं।

इससे पता चलता है कि शिक्षा के स्तर से बहुत कम महिलाएं उच्चतम और निम्नतम शिक्षा स्तर पर हैं। साथ ही उनमें से अधिकांश निम्न आय वर्ग (10000/- रुपये से कम) में हैं। इसलिए, हम कह सकते हैं कि, नमूना औसत शिक्षा स्तर के साथ निम्न आय वर्ग की कामकाजी महिलाओं का प्रतिनिधित्व करता है।

स्वतंत्रता की परीक्षा:

शिक्षा स्तर और कामकाजी महिलाओं द्वारा अर्जित आय के बीच संबंध के महत्व का ची-स्क्वायर परीक्षण का उपयोग करके परीक्षण किया गया था। शून्य और वैकल्पिक परिकल्पनाओं को नीचे बताया गया है।

हो: कामकाजी महिलाओं का आय स्तर और शिक्षा का स्तर स्वतंत्र है H1: कामकाजी महिलाओं का आय स्तर और शिक्षा स्तर स्वतंत्र नहीं है ची-वर्ग मूल्य = 593.30> 26.29 16 d.f के साथ। 5% l.o.s . पर पी-वैल्यू = 0.0000 <0.05 निर्णय: हो अस्वीकार करें

निष्कर्ष

कामकाजी महिलाओं की आय का स्तर कामकाजी महिलाओं के शिक्षा स्तर से महत्वपूर्ण रूप से संबंधित है। यह आसानी से समझा जा सकता है कि उच्च शिक्षा स्तर के साथ महिलाओं को बेहतर संभावनाएं या नौकरी के अवसर मिलते हैं।

निर्णय लेने के विशिष्ट संकेतकों पर कामकाजी महिलाओं की स्व-निर्णय गणना (अतीत और वर्तमान) पर विश्लेषण प्राप्त किया जाता है और नीचे दी गई तालिका में दिखाया गया है।

तालिका 3- निर्णय लेने के संकेतकों पर कामकाजी महिलाओं की स्व-निर्णय गणना

अनु क्रमांक	निर्णय लेने के संकेतक	अतिरिक्त योग्यता ली			खुद के नाम पर खरीदी संपत्ति		
	वित्तीय निर्णय लेना	अतीत	वर्तमान	बदलना (%)	अतीत	वर्तमान	बदलना (%)
1	अपनी स्वयं की आवश्यकताओं की खरीद पर	239	346	44.77	137	167	21.9
2	व्यक्तिगत स्वास्थ्य (डॉक्टर के पास जाएँ या अस्पताल का चयन करें)	118	156	32.2	106	141	33.02
3	बड़ी घरेलू खरीदारी (टीवी, फ्रिज आदि)	213	224	5.16	133	141	6.02
4	खुद के लिए संपत्ति की खरीद (मकान, कार आदि)	72	106	47.22	42	38	-9.52
5	खर्च पति की आय	95	160	68.42	49	72	46.94
	आंदोलन की स्वतंत्रता						
6	क्या आपको मित्र के साथ बाहर जाने के लिए अनुमति की आवश्यकता है	133	152	14.29	61	49	-19.67
7	क्या आपको अकेले बाहर जाने के लिए अनुमति की आवश्यकता है?	209	258	23.44	118	125	5.93
8	माता-पिता या भाई-बहनों के साथ जाना और रहना	61	118	93.44	49	68	38.78
9	दोस्तों और सहकर्मियों के साथ बाहर जाना	171	224	30.99	87	122	40.23
10	एक सामाजिक क्लब/राजनीतिक दल में शामिल होना	194	255	31.44	80	118	47.5
	बच्चों की शिक्षा और करियर						
11	बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य (स्कूल, ट्यूशन)	194	266	37.11	114	144	26.32
12	बच्चों के लिए अतिरिक्त कोचिंग या अन्य गतिविधियाँ	156	224	43.59	118	152	28.81
	मीडिया तक पहुंच						
13	इंटरनेट उपयोग तक पहुंच	156	247	70.51	91	106	25.27
14	मोबाइल फोन तक पहुंच	156	266	58.33	91	114	16.48
15	टेलीविजन तक पहुंच	148	228	54.05	76	95	25
	सामाजिक भागीदारी						
16	अकेले सामाजिक/राजनीतिक सभा में भाग लेना	125	213	70.4	103	152	47.57
17	किसी भी सामाजिक संगठन एनजीओ के लिए कार्य करना	137	228	66.42	114	167	46.49
18	घर में कोई आध्यात्मिक, सामाजिक कार्य करना	106	243	129.25	65	152	133.85
19	सामाजिक/महिला मुद्दों के अभियान में भाग लेना	171	285	66.67	110	171	55.45

उपरोक्त तालिका से, हम नोट कर सकते हैं कि,

- स्व-निर्णय द्वारा अतिरिक्त योग्यता प्राप्त करने वाली महिलाओं के लिए स्वनिर्णय की संख्या में अधिकतम (129.25%) परिवर्तन 'घर में कोई आध्यात्मिक, सामाजिक कार्य करने' पर देखा जाता है, इसके बाद 93.44% पर देखा जाता है।

- माता-पिता या भाई-बहनों के साथ जाना और रहना 'और दूसरी ओर 'इंटरनेट तक पहुंच' पर 70.44%

- पिछले 10 वर्षों के दौरान जिन महिलाओं ने अपने नाम पर संपत्ति खरीदी है, उनके लिए स्व-निर्णय की संख्या में अधिकतम (133.85%) परिवर्तन "घर में किसी भी आध्यात्मिक, सामाजिक कार्यों को आयोजित करने" पर देखा जाता है, इसके बाद 55.45% पर देखा जाता है। सामाजिक/महिला मुद्दों के अभियान में भाग लेना" और 47.57%„सामाजिक/राजनीतिक सभा में अकेले भाग लेना"।

इस प्रकार हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि सवेतन रोजगार तक पहुंच ने अध्ययन क्षेत्र में कामकाजी महिलाओं की निर्णय शक्ति में वृद्धि की है।

अनुपात में महत्वपूर्ण अंतर का परीक्षण:

महिलाओं के लिए बताए गए संकेतकों पर स्व-निर्णय लेने वाली महिलाओं का वर्तमान अनुपात

"अतिरिक्त योग्यता ली गई" और "खुद के नाम पर खरीदी गई संपत्ति" का परीक्षण दो-नमूना जेड-परीक्षण का उपयोग करके महत्वपूर्ण अंतर के लिए किया गया था। शून्य और वैकल्पिक परिकल्पनाओं को नीचे बताया गया है।

H0: दो समूहों में महिलाओं के लिए निर्णय लेने के घोषित संकेतक पर स्व-निर्णय लेने वाली महिलाओं के अनुपात में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है

H1: निर्णय लेने के बताए गए संकेतक पर स्व-निर्णय लेने वाली महिलाओं का अनुपात दो समूहों में महिलाओं के लिए काफी भिन्न होता है

तालिका 4- अनुपात में महत्वपूर्ण अंतर का परीक्षण (जेड और पी-मूल्य) तालिका

निर्णय लेने के संकेतक		अतिरिक्त योग्यता ली	खुद के नाम से खरीदी संपत्ति		
अनु क्रमांक	स्व-निर्णय लेने वाली कामकाजी महिलाओं की संख्या	433	205	Z-मूल्य	P-वैल्यू
	वित्तीय निर्णय लेना				
1	अपनी स्वयं की आवश्यकताओं की खरीद पर	0.799	0.814	-0.460	0.322
2	व्यक्तिगत स्वास्थ्य (डॉक्टर के पास जाना, अस्पताल का चयन करना आदि)	0.360	0.687	-7.744	000
3	बड़ी घरेलू खरीदारी (टीवी, फ्रिज, आदि)	0.517	0.687	-4.064	000
4	खुद के लिए संपत्ति की खरीद	0.244	0.185	1.676	0.046
5	खर्च पति की आय	0.369	0.351	0.4487	0.326
	आंदोलन की स्वतंत्रता				
6	दोस्तों के साथ बाहर जाना	0.351	0.239	2.8439	0.002
7	अकेले बाहर जाओ	0.595	0.609	-0.337	0.368
8	माता-पिता या भाई-बहनों के साथ जाना और रहना	0.272	0.331	-1.536	0.062
9	दोस्तों और सहकर्मियों के साथ बाहर जाना	0.517	0.595	-1.841	0.032
10	एक सामाजिक क्लब/राजनीतिक दल में शामिल होना	0.588	0.575	0.3183	0.375
	बच्चों की शिक्षा और करियर				
11	बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य	0.614	0.702	-2.168	0.015
12	बच्चों के लिए अतिरिक्त कोचिंग या अन्य गतिविधियाँ	0.517	0.741	-5.375	000
	मीडिया तक पहुंच				
13	इंटरनेट तक पहुंच	0.570	0.517	1.264	0.103
14	मोबाइल फोन तक पहुंच	0.614	0.556	1.3987	0.080
15	एक्सेस टेलीविजन	0.526	0.463	1.491	0.067
	सामाजिक भागीदारी				
16	अकेले सामाजिक/राजनीतिक सभा में भाग लेना	0.491	0.741	-5.950	000
17	किसी भी सामाजिक संगठन एनजीओ के लिए कार्य करना	0.526	0.814	-6.995	000
18	घर में कोई आध्यात्मिक, सामाजिक कार्य करना	0.561	0.741	-4.379	000
19	सामाजिक/महिला मुद्दों के अभियान में भाग लेना	0.658	0.834	-4.594	000

उपरोक्त तालिका से हम देख सकते हैं कि महिलाओं का अनुपात

- अनुपातिक रूप से वित्तीय निर्णय लेने वाली महिलाओं के लिए स्व-निर्णय द्वारा अतिरिक्त योग्यता प्राप्त करने वाली महिलाओं की तुलना में अपने नाम पर संपत्ति खरीदने वाले महिलाओं के लिए काफी अधिक है। यह आंदोलन की स्वतंत्रता, बच्चों की शिक्षा और सामाजिक भागीदारी पर निर्णय लेने के मामले में भी अधिक है। यह दर्शाता है कि, आर्थिक सशक्तिकरण निर्णय लेने और आंदोलन की स्वतंत्रता पर अधिक स्वायत्तता देता है। जबकि,

- मीडिया एक्सेस पर निर्णय लेने में उक्त अनुपात काफी अधिक है और निर्णय लेने पर महत्वहीन रूप से पति की आय खर्च करना' और 'सामाजिक/राजनीतिक क्लब में शामिल होना'। इससे पता चलता है कि शिक्षा वित्तीय निर्णयों या स्वतंत्रता पर स्वायत्तता नहीं बढ़ा सकती है, लेकिन यह मीडिया तक अधिक पहुंच और पति की आय पर नियंत्रण प्रदान करती है।

हालांकि, कुछ संकेतकों पर अनुपात में अंतर नगण्य है जैसे: अपनी खुद की जरूरतों की खरीद, अपने पति की आय खर्च करना, अकेले बाहर जाने की स्वतंत्रता, एक सामाजिक क्लब / राजनीतिक दल में शामिल होना और इंटरनेट तक पहुंच। यह इंगित करता है कि, 'शिक्षा में अधिकारिता' और 'संपत्ति की खरीद' का इन संकेतकों पर कामकाजी महिलाओं के निर्णय लेने पर लगभग समान प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष और उपसंहार

नमूना मध्यम शिक्षा स्तर और निम्न-आय स्तर वाली कामकाजी महिलाओं का प्रतिनिधित्व करता है। कामकाजी महिलाओं की आय का स्तर कामकाजी महिलाओं के शिक्षा स्तर से महत्वपूर्ण रूप से संबंधित है। यह आसानी से समझा जा सकता है कि उच्च शिक्षा स्तर के साथ महिलाओं को बेहतर संभावनाएं या नौकरी के अवसर मिलते हैं।

- स्वनिर्णय द्वारा अतिरिक्त योग्यता प्राप्त करने वाली महिलाओं के लिए स्वनिर्णय की संख्या में अधिकतम)129.25%) परिवर्तन घर में कोई आध्यात्मिक, सामाजिक कार्य करने पर देखा जाता है" इसके बाद 93.44% मातापिता के साथ रहने और रहने पर देखा - बहन-जाता है या भाई' और दूसरी ओर 'इंटरनेट तक पहुंच' पर 70.44%

- 10 वर्ष के समय के दौरान महिला के नाम पर संपत्ति रखने वाला व्यक्ति, अपने स्व-निर्णय की संख्या में बदलाव करने के लिए (133.85%) सामाजिक रूप से सुंदर, सामाजिक रूप से सुंदर है, जैसा कि यह 55.45 प्रतिशत है। "लेना" पर देखा गया। सामाजिक/राजनीतिक सभा में भाग लेने के लिए।

इस प्रकार हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि सवेतन रोजगार तक पहुंच ने अध्ययन क्षेत्र में कामकाजी महिलाओं की निर्णय शक्ति में वृद्धि की है।

वित्तीय (स्व) निर्णय लेने के संबंध में, अधिकतम परिवर्तन (54.4%) अपनी स्वयं की आवश्यकताओं की खरीद पर देखा जाता है" इसके बाद 59.2% w.r.t. पति की आय खर्च करना"

इसलिए, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि आर्थिक सशक्तिकरण महिलाओं को निर्णय लेने में उनकी भागीदारी के बारे में अधिक चिंतित करता है, चाहे वे किसी भी धर्म का पालन करें।

अध्ययन से यह भी पता चलता है कि अनुपात में आर्थिक सशक्तिकरण निर्णय लेने और आंदोलन की स्वतंत्रता पर अधिक स्वायत्तता देता है। जबकि, शिक्षा मीडिया तक अधिक पहुंच प्रदान करती है और पति की आय पर नियंत्रण करती है, हालांकि यह वित्तीय निर्णयों या स्वतंत्रता पर स्वायत्तता को नहीं बढ़ा सकती है।

अंत में हम कह सकते हैं कि महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा तक पहुंच आवश्यक है, हालांकि यह कामकाजी महिलाओं को निर्णय लेने में स्वायत्तता देने के लिए पर्याप्त नहीं है।

संधर्व ग्रंथ सूचि

1. डोमिनिक बी, जोठी सी.ए. (2012), शिक्षा- महिला सशक्तिकरण का एक उपकरण: केरल समाज पर आधारित ऐतिहासिक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक एंड रिसर्च पब्लिकेशन, 2 (4), 2250-3153।

2. कांटोर, पी: घर-आधारित काम के माध्यम से महिला सशक्तीकरण: भारत से साक्ष्य। विकास और परिवर्तन, 2003।

3. तमाले, नव-उदारवादी शासन बनाना: सशक्तीकरण का काम। इंटरनेशनल प्लानिंग स्टडीज, 9 (4) 2005: पृष्ठ सं239-259।

4. दास, कार्तिक और शर्मा, गोपाल, एड। वित्तीय समावेशन, स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) और महिलाएं। नई दिल्ली: नई शताब्दी प्रकाशन, 2014. पृष्ठ सं, 179

5. सुगुना एम। (2011)। भारत में शिक्षा और महिला सशक्तिकरण। बहु-विषयक अनुसंधान की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका: 8(1).

6. जूलिया "एसएचजी दृष्टिकोण के माध्यम से महिला सशक्तिकरण" सामाजिक कार्य की भारत पत्रिका 71: 4 (2010)

7. श्रीवास्तव एन। शिक्षा: महिला सशक्तीकरण (मुद्दों और चुनौतियों) के लिए एक रास्ता। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च एंड रिव्यू। 2014; 4 (10): 1007-1013।

8. ऐजाज जे, शशिकला एडीजे। शिक्षा के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण। गोल्डन रिसर्च विचार, 2013, 2 (10)।

9. मलिका एस, कर्टनी के। उच्च शिक्षा और पाकिस्तान में महिला सशक्तिकरण, लिंग और शिक्षा, 2011; 23 (1): 29-45

10. सोनाली चन्नवर "महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका" इंजीनियरिंग एंड रिसर्च (आईजेआरटीआर) वॉल्यूम 02, अंक 11 में हाल के रुझानों के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल; नवंबर - 2016 [आई एस एस एन: 2455-1457]

11. सोवन्या एस। शेट्टी "महिला सशक्तिकरण और विकास में शिक्षा की भूमिका: मुद्दे और प्रभाव", 26 (7), 2015, पृष्ठ सं-15-26

12. भजन चंद्र बर्मन, "सशक्त महिलाओं में शिक्षा की भूमिका: एक केस अध्ययन", सामाजिक विज्ञान की एशियाई समीक्षा, आई एस एस एन: 2249-6319 7 (1), 2018, पृष्ठ सं- 16-20

13. परवेज यूसुफ (2019) "महिला सशक्तीकरण में शिक्षा की भूमिका (ग्वालियर शहर म.प्र। भारत की महिला प्रोफेसरों का समाजशास्त्रीय अध्ययन")

Corresponding Author

Pradeep Kumar Kushwaha*

Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.